भाषाई और सांस्कृतिक विरासत को संजोना होगा

रांची | प्रमुख संवाददाता

सीयूजे में बुधवार को छऊ नृत्य की प्रस्तुति देते विद्यार्थी। • हिन्दुस्तान

केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड (सीयूजे) के लुप्तप्राय भाषा केंद्र की ओर से आयोजित बिरसा मुंडा भाषा एवं सांस्कृतिक महोत्सव-2019 के दूसरे दिन बुधवार को गंभीर साहित्यक परिचर्चा के साथ सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी हुईं। इनमें झारखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की झलक दिखी। साथ ही, भाषा और संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए साहित्यकारों और भाषाविदों ने अपने सुझाव भी दिए।

दूसरे दिन के कार्यक्रम की शुरुआत साहित्यिक गोष्ठी से हुई। इसमें झारखंड की प्रमुख जनजातीय भाषा के साहित्यकारों ने हिस्सा लिया।

महादेव टोप्पो, मंगल सिंह मुंडा, वीरेंद्र सोय, समीर भगत, डॉ जोसेफ बाड़ा, शरण उरांव आदि ने गोष्ठी में हिस्सा लिया।

उन्होंने आदिवासी साहित्य और भाषा के महत्व पर चर्चा की। साथ ही इनके विकास के लिए क्या किया जा सकता है, इसके विभिन्न आयामों पर बात हुई। खासकर लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के लिए उनके दस्तावेजीकरण पर जोर दिया गया।

दूसरा सत्र सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के नाम रहा : दूसरा सत्र सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के नाम रहा। छात्र-छात्राओं ने पाईका नृत्य, मुंडारी नृत्य, खड़िया नृत्य, उरांव नृत्य प नागपुरी नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति पर सबको झूमने के लिए मजबूर कर दिया। महोत्सव में जनजातीय खानपान भी आकर्षण का केंद्र रहा। महोत्सव का समापन गुरुवार को होगा।